काजरी प्रसार बुलेटिन – 2004/1

औषधीय खरपतवार : आय के स्त्रोत

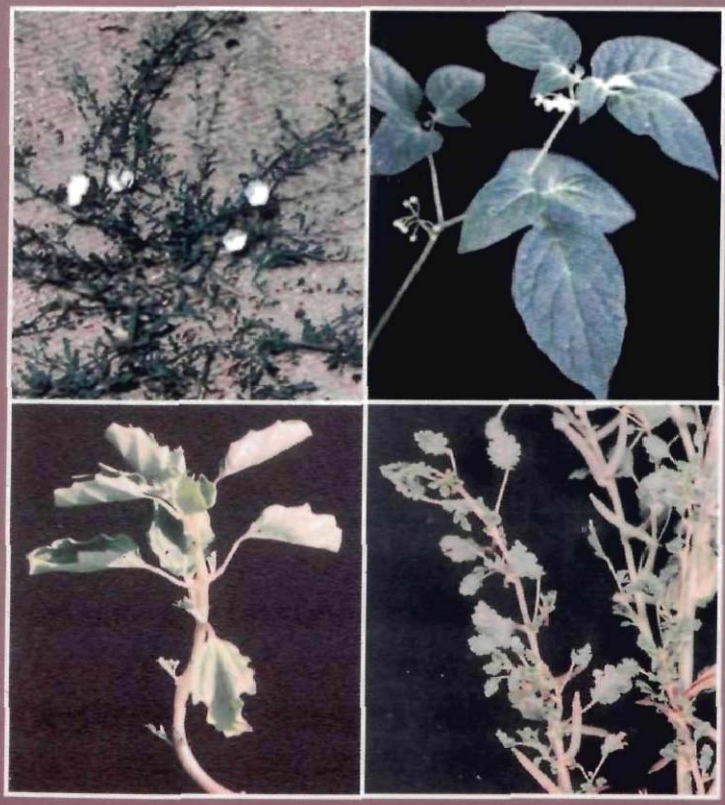

डा. सुरेश कुमार

डा. श्रीमती फरज़ाना परवीन

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

जोधपुर – 342003, राजस्थान

2004

औषधीय खरपतवार : आय के स्रोत

प्रकाशन : फरवरी, 2004

प्रकाशक : डॉ. प्रताप नारायण
निदेशक
केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान,
जोधपुर – 342 003
फोन : 0291–2740584 फेक्स : 0291–2740706

Correct Citation :
Suresh Kumar and Farzana Parveen, 2004. Aushdhiya Kharpatwar : Aai ke Srot. CAZRI Prasar Bulletin - 2004/1, CAZRI, Jodhpur. 23 P.

प्रस्तावना

भारतवर्ष का लगभग 38 प्रतिशत भूभाग शुष्क एवं अर्धशुष्क है जिसमें परम्परागत बहुउपयोगी एवं औषधीय वनस्पतियों की बहुतायत है। हमारे देश में प्रचलित औषधीय पौधों की 7500 प्रजातियों में से 800 प्रजातियाँ दवाई उद्योग में काम आती है जिनमें से 120 औषधियों का वृहद उत्पादन एवं विपणन होता है। औषधीय प्रजातियों की कुल आवश्यकता का केवल 25 प्रतिशत ही कृषि द्वारा उत्पादित किया जाता है एवं शेष को प्राकृतिक स्रोतों जैसे पहाड़ों, वनों, चरागाहों, परत भूमियों एवं खेत के खरपतवारों से ही एकत्रित किया जाता है। प्राकृतिक स्थानों में इन वनस्पतियों की सम्भाव्यता देश के शुष्क एवं अर्धशुष्क राजस्थान में सर्वाधिक है। अत: गुणी वैद्य जन एवं अन्य उत्पादक कई दशकों से इन औषधीय पौधों को यहाँ एकत्रित करवाते रहे हैं। इनके बारे में अनभिज्ञता या नियमित बाज़ार के अभाव में किसान को मात्र इनको इकट्ठा करने की मज़दूरी से ही सन्तोष करना पड़ता है। रोग निदान में पौध उत्पादों के बढते उपयोग के रुझान के दृष्टिगत अब आवश्यक है कि हमारे किसान भी इन पौधों को पहचानें ताकि इन्हें एकत्रित कर अतिरिक्त आय भी कमा सकें।

काजरी के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों हेतु इन औषधीय पौधों एवं इनके बिकने वाले उत्पाद के बारे में जानकारी सरल भाषा में प्रस्तुत करने का यह प्रयास किसानों के खाली समय के सदुपयोग एवं आय वृद्धि में सहायक सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है। लेखकों को बधाई एवं आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

डॉ. प्रताप नारायण
निदेशक

औषधीय रूप से उपयोगी खरपतवारों की पहचान व जानकारी

मनुष्य और वनस्पति का पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन है। अपने दैनिक जीवन में तो हम निरन्तर पौधों का उपयोग करते हैं लेकिन पौधों से बनने वाली अनेकों दवाओं से बहुधा हम अनजान ही रहते हैं। हमारे राज्य यानि राजस्थान और विशेष तौर से पश्चिमी राजस्थान में जहाँ बहुत कम वर्षा होती है, में भी अनेकों प्रकार के ऐसे पौधे हैं जिनसे जीवनदायी दवाएँ बनती हैं। कुछ वनस्पतियां प्राकृतिक रूप से विभिन्न स्थानों पर जैसे खेत एवं खलिहान में या आस पास के क्षेत्रों में, बजंर भूमि में, घर के आस पास या फिर गोचर, औरण, आगोर एवं बीड में प्राकृतिक रूप से या खरपतवार के रूप में पायी जाती हैं । इन वनस्पतियों को उसी क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीण/किसान भाई थोड़े परिश्रम से एकत्रित करके, सुखाकर एवं बेच कर, अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं । सिर्फ आवश्यकता है जानकारी एवं पौधों के पहचान की । हालांकि आप सभी अपनी अपनी भाषा में हर एक पौधे को पहचानते हैं लेकिन शायद उनके महत्व को नहीं । रेगिस्तानी क्षेत्र के कुछ मुख्य पौधे जिनको सरलता से बिना किसी लागत के प्राकृतिक स्त्रोतों से एकत्रित किया जा सकता है, उनका उल्लेख इस बुलेटिन में किया जा रहा है। हमें आशा है कि किसान भाई इस जानकारी का उपयोग कर औषधीय पौधे एकत्रित करेंगे। इनको आप जोधपुर या अपने शहर में स्थित आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों की दुकानों पर लाकर बेच सकते हैं।

कृपया इस बुलेटिन में बताए गए औषधीय गुणों के आधार पर इन पौधों को स्वयं की चिकित्सा में उपयोग, किसी योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह के पश्चात ही करें । किसी भी रोग में बूटियों के प्रभावों अथवा दुष्प्रभावों की जिम्मेदारी काजरी संस्थान की नहीं होगी । प्रत्येक पौधे के प्रसंसकरित होने के पश्चात् इसे विभिन्न जडी बूटियों के क्रेताओं को बेचान करने पर होने वाली आय केवल अनुमानित है क्योंकि इनके खरीद मूल्य में उतार चढाव अक्सर काफी ज्यादा देखा गया है, अतः इनके बेचान पर मिलने वाली पूंजी उस समय के बाजार भाव से ही नियन्त्रित होने के कारण वही सही मानें ।

लेखकगण

राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र के किसानों की समृद्धि हेतु समर्पित

आभार

लेखकगण डॉ. मंगला राय, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं डॉ. जे.एस. सामरा, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के आभारी है जिन्होंने कृषि अनुसंधान एवं प्रसार में उच्च आयामों की प्राप्ति हेतु संसाधन एवं दिशा निर्देश प्रदान कर हमें अनुग्रहीत किया।

हम काजरी निदेशक डा. प्रताप नारायण के भी आभारी हैं जिन्होंने इस बुलेटिन को लिखने हेतु प्रेरणा दी व समय – समय पर अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा इसमें कई सुधार सुझाए। सतत् उत्साहवर्धन एवं योग्य मार्गदर्शन के लिये हम निदेशक महोदय का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

लेखकगण

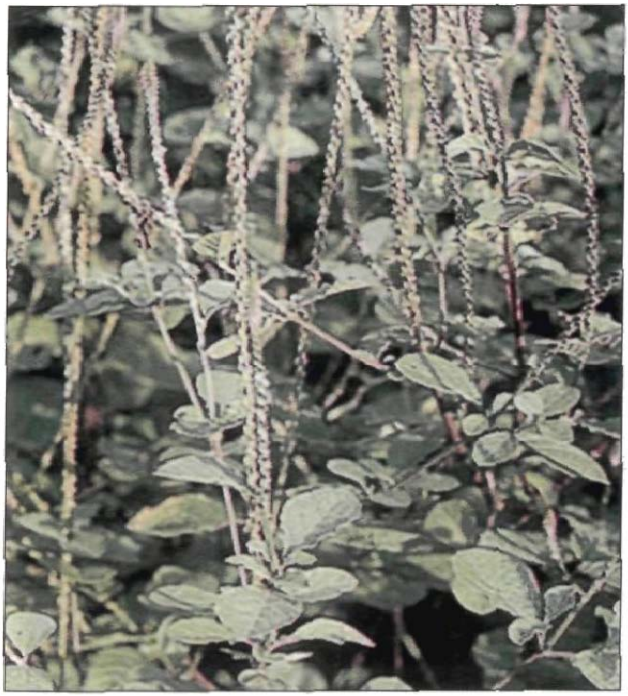

ऊँडा काँटा का पौधा

बाजार में बिकने वाला ऊँडा काँटा या अपामार्ग का उत्पाद

अपामार्ग (*Achyranthes aspera* Linn.)

अंग्रेजी : रफशैफ

हिन्दी : चिरचिटा, लटजीरा

स्थानीय : ऊँडा काँटा, अन्धा जाला

कुल : एमेरेन्थेसी

प्राप्ति स्थान : यह एक झाड़ी नुमा पौधा होता है जो कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में बारानी क्षेत्रों, बंजर स्थानों तथा जंगलों में बड़े वृक्षों के नीचे पाया जाता है। वर्षा के समय यह प्राकृतिक रूप से उगने वाला पौधा है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह एकवर्षीय पौधा है, जिसकी ऊँचाई एक मीटर के करीब होती है । इसका तना धारीदार हल्का हरा या गुलाबी रंग का एवं रोयेंदार होता है । पत्ते लम्बाई लिये हुये कुछ गोल और नोकदार होते हैं । फूल छोटे एवं हरे रंग के होते हैं, पुराने फूल नीचे की तरफ होते हैं और नये फूल स्पाइक (पुष्प डंठल) के उपरी हिस्से में पाये जाते हैं । इसके बीज नोकदार एवं काँटेदार तथा प्रायः कपड़ों से चिपकने वाले होते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा

औषधीय उपयोग : इसकी जड़ को पानी में घोलकर पिलाने से पथरी रोग में लाभ पहुँचता है, इसकी मोटी टहनी से दातुन करने से दाँतों में सड़न, दाँतों का हिलना एव मसूड़ों की कमजोरी दूर होती है । अपामार्ग का क्षार पीने से पेट की तकलीफ दूर होती है । चोट, रक्तस्राव या घाव से रक्त बहने पर पत्तियों को पीस कर लगाने से रक्तस्राव रुक जाता है तथा दर्द में कमी आती है । बिच्छू के डंक मारे हुए स्थान पर अपामार्ग की जड़ को पानी में पीसकर लगा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है । यह खाँसी और बलगम दूर करने में भी काम आता है । इसके बीजों की खीर बनाई जाती है जो मस्तिष्क के रोगियों के लिये उत्तम औषधि मानी जाती है ।

पौध प्रसंसकरण : जड़ सहित पौधे को उखाड़ कर पौधे को फल आने से पहले एकत्रित करें । बीज एकत्रित करने के लिये बीजों को परिपक्व होने पर एकत्रित करें। पौधे के सभी भाग धूप में सुखा लें ।

विपणन : इसके बीज एवं पौधे को बेचने पर 8–15 रुपये प्रति किलो प्राप्त किये जा सकते हैं ।

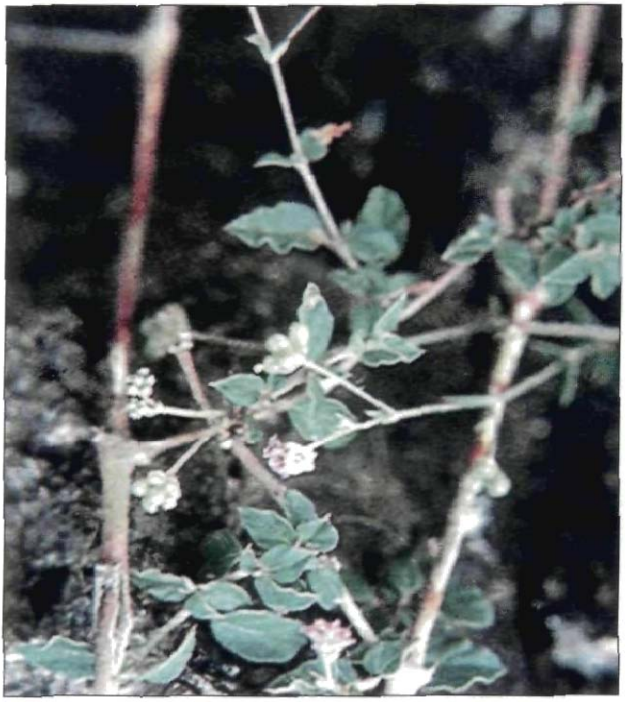

साँटी का पौधा

बाजार में बिकने वाला साँटी या पुनर्नवा का उत्पाद

पुनर्नवा (*Boerhavia diffusa* Linn.)

अंग्रेजी	:	होग वीड
हिन्दी	:	पुनर्नवा
स्थानीय	:	साँटी, चिनावरी
कुल	:	निक्टाजिनेसी

प्राप्ति स्थान : भारतवर्ष में यह पौधा प्रायः सभी स्थानों पर अत्याधिक मात्रा में खरपतवार के रूप में पाया जाता है । औषधीय महत्व का होने के कारण इसको खेती के रूप में भी लगाया जाता है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह जमीन पर फैलने वाला बहुवर्षीय पौधा है । इसकी शाखायें जमीन पर भी फैलती हैं एवं उपर की ओर खड़ी भी रहती हैं । इसकी जड़ गहरी होती है । पत्तियों की उपरी सतह चमकदार एवं गहरी और निचली सतह हल्के रंग की होती है । पत्तियों की मोटाई भी अधिक होती है। फूल गुच्छे के रुप में एक लम्बे तने पर व्यवस्थित होते हैं एवं गुलाबी रंग के होते हैं । इसका फल अंडाकार आकार में पाँच धारी वाला होता है ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा

औषधीय उपयोग : यह मूत्र वर्धक एवं कब्जनाशक पौधा है । यह कई प्रकार के रोगों में प्राचीन काल से ही उपयोग में लाया जाता है जैसे गुर्दे, हृदय, अस्थमा, कमजोरी, पीलिया, पेट के रोग इत्यादि । पत्तियों का रस गुर्दे की बीमारी एवं ड्रोप्सी में अत्याधिक प्रभावी होता है । गांवों में प्रायः इसकी पत्तियों की सब्जी बनाकर खायी जाती है । यह आँखों के रोग जैसे रात के समय दिखाई न देना में बहुत उपयोगी है ।

सूजाक रोग में पुनर्नवा को देने से जलन कम होती है और मूत्र की मात्रा बढ़ जाती है जिससे मूत्र नलिका की सूजन कम हो जाती है। इसके जड़ का क्वाथ पीने से दमा, खाँसी व बाइंठे में आराम मिलता है । इसकी जड़ एवं पत्ते पीसकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाने से विष उतर जाता है।

पौध प्रसंसकरण : पूरे पौधे को जड़ सहित उखाड़कर जड़ को अलग कर सुखा दिया जाता है । पत्तियां तुरन्त तोड़ने के बाद उसी समय ही काम में ली जाती हैं ।

विपणन : उपरोक्त सुखाई गई जडों को बेचने से 12–20 रुपये प्रतिकिलो आय प्राप्त की जा सकती है ।

तुम्बा का फल

बाजार में बिकने वाला तुम्बा का उत्पाद

इन्द्रायन (*Citrullus colocynthis* (L.) Schard.)

अंग्रेजी : बिटर एपल

हिन्दी : इन्द्रायन

स्थानीय : तुम्बा

कुल : कुकरबिटेसी

प्राप्ति स्थान : यह बेल रेगिस्तानी क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पायी जाती है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह एक बहुवर्षीय भूशायी बेल है । इसका जड़ तंत्र काफी विकसित होता है तथा रेगिस्तानी क्षेत्रों में तुम्बे की दूर दूर तक घनी बेलें रेत को उड़ने से रोकने में मुख्य भूमिका निभाती हैं। इसकी पत्तियां 3–5 भागों में बंटी होती हैं एवं डेल्टाकार होती हैं। इसकी बेल पर नर और मादा दो प्रकार के पीले रंग के फूल लगते हैं । इसके फल 5–8 इंच व्यास के होते हैं जो प्रांरम्भ में हरे रंग के होते हैं तथा पकने पर पीले तथा सफेद रंग की धारियों वाले होते हैं। इसके बीज भूरे, चिकने, लम्बे गोल और चपटे होते हैं।

उपयोगी भाग : जड़ एवं बीज

औषधीय उपयोग : फल के सूखे गूदे में 'कोलो सींथ' नामक औषधि का संगठन मिलता है। इससे गुणकारी औषधि जुलाब तैयार की जाती है । जड़ का चूर्ण पीलिया, मूत्र रोग, पेट साफ करने, मानसिक तनाव व गठिया आदि रोगों में गुणकारी साबित हुआ है । बाड़मेर जिले के लोग जड़ के रस की 2–3 बूंदें कान में डालते हैं जिससे कान का दर्द कम हो जाता है । पके हुये फल की धूनी मुंह में लेने से दांत में पाये जाने वाले कीड़े तुरन्त मर जाते हैं एवं दंत पीड़ा में आराम मिलता है ।

पौध प्रससंकरण : सम्पूर्ण पौधे को फल पकने के बाद उखाड़ कर जड़ सहित निकाल लेते हैं एवं उसके छोटे–छोटे टुकड़े करके धूप में सुखाते हैं। पके फल से बीजों को एकत्रित करके धूप में अलग से सुखाते हैं।

विपणन : इसकी जड़ बेचने पर 10–15 रुपये प्रति किलो तक प्राप्त होते हैं।

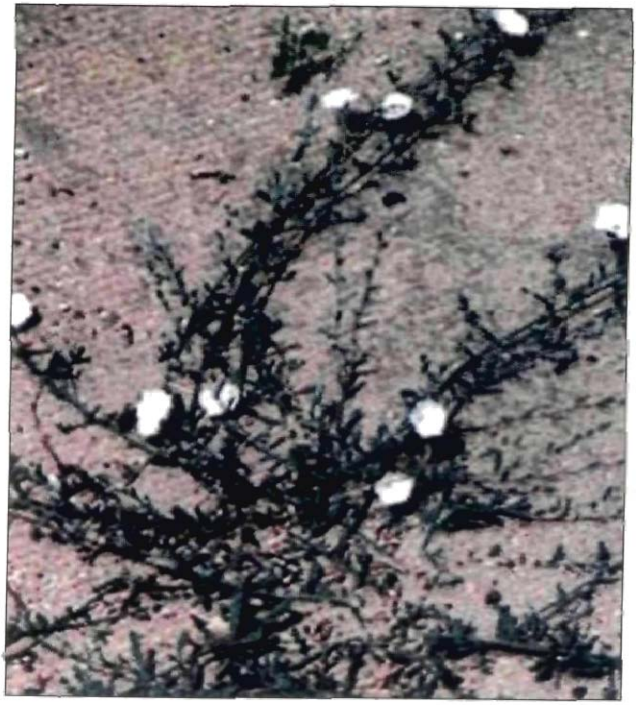

सिन्तरी का पौधा

बाजार में बिकने वाला सिन्तरी या शंख पुष्पी का उत्पाद

शंख पुष्पी (*Convolvulus microphyllus* Sieb. ex Spreng.)

हिन्दी	:	शंख पुष्पी
स्थानीय	:	सिन्तरी
कुल	:	कन्वोलव्यूलेसी

प्राप्ति स्थान : यह वर्षा ऋतु में पाई जाने वाली खरपतवार है जो प्रायः रेतीली जमीन पर पायी जाती है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह बहुशाखित रोयेंदार जमीन पर फैलने वाली बेल है। इसकी पत्तियां छोटी, लम्बी व आगे से नुकीली होती हैं । पत्तियों पर बहुत अधिक मुलायम रोयें होते हैं । इसके 2–3 पुष्प एक साथ पुष्प वाली शाखा पर लगते है। पुष्प एकल कीप के आकार का और हल्का गुलाबी सफेद रंग लिये होता है । इसका फल पूरी तरह से गोल नहीं होता है । अगस्त से सितम्बर माह में फूल व फल लगते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा।

औषधीय उपयोग : शंख पुष्पी बुद्धिवर्धक, स्मरण शक्तिवर्धक एवं बलवर्धक होती है । पौधे को क्वाथ के रूप में उपयोग में लाया जाता है ।

पौध प्रसंसकरण : फूल आने के समय एवं फल और बीज के परिपक्व होने से पहले सम्पूर्ण पौधा इकट्ठा करके छाया में सुखा लें । सुखाने से पहले छोटे छोटे टुकड़े कर लें ताकि शीघ्र सूख जाये ।

विपणन : उपरोक्त सुखाए गये पौधे को बेचने से 15–20 रुपये प्रति किलो की आय अर्जित की जा सकती है ।

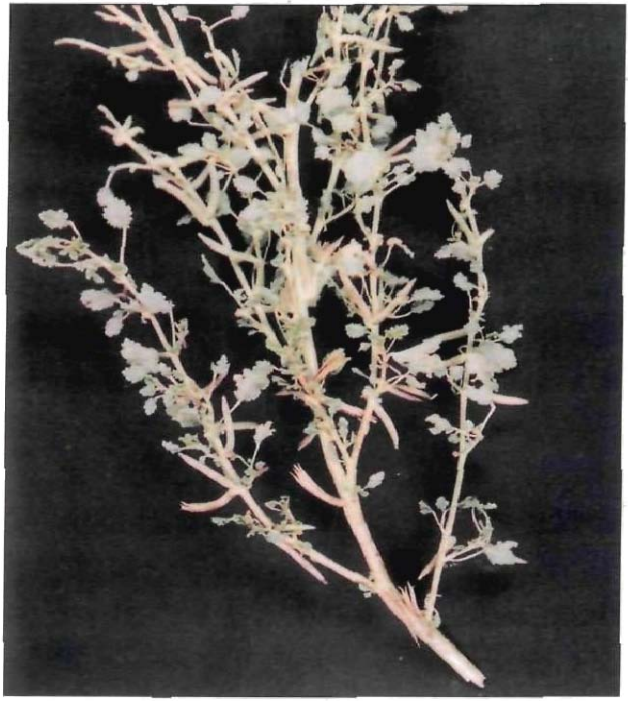

चामकस का पौधा

बाजार में बिकने वाला चामकस का उत्पाद

चामकस (*Corchorus depressus* (L.) Christensen)

हिन्दी : चामकस

स्थानीय : चामकस

कुल : टिलिएसी

प्राप्ति स्थान : इसके पौधे वर्षा ऋतु में अधिक उगते हैं । यह कंकरीली भूमि पर सड़क के किनारे शुष्क जमीन पर अधिक पाया जाता है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह बहुवर्षीय, बहुशाखित, जमीन पर फैलने वाला पौधा है । इसकी पत्तियां छोटी व कंगूरेदार होती हैं। इसके फूल पीले रंग के और पत्तियों के विपरीत दिशा में लगे होते है। इसका फल केप्स्यूल होता है जो नीचे की शाखाओं से निकलकर ऊपर की सतह पर निकला रहता है। इसमें प्रायः चार धारियाँ होती है। इसके बीज काले रंग के होते हैं । फल और फूल प्रायः पूरे वर्ष भर आते हैं।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा।

औषधीय उपयोग : सम्पूर्ण पौधा बलवर्धक है एवं गोनोरिया में लाभदायक हैं। पत्तियों के चूर्ण में बड़ा गोखरू के बीजों का चूर्ण मिला कर लेने से मधुमेंह में आराम मिलता है । पत्तियों का चूर्ण प्रातः काल लेने से पुरूषों की नपुंसकता दूर हो जाती है ।

पौध प्रसंसकरण : सम्पूर्ण पौधे एवं पत्तियों को दोपहर के समय तोड़कर छोटे–छोटे टुकड़े करके फैलाकर सुखा लें।

विपणन : सम्पूर्ण सूखे पौधे को 10–15 रुपये प्रति किलो की दर से बेचा जा सकता है ।

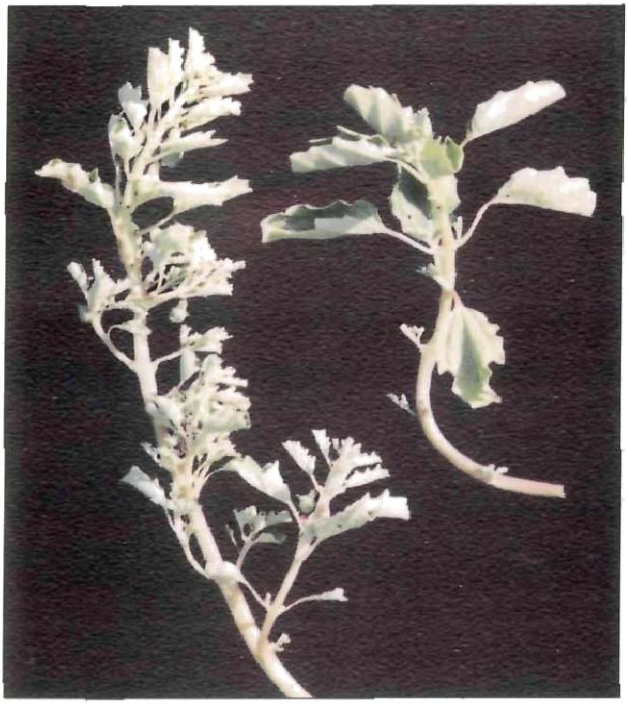

बड़ा गोखरू का पौधा

बाजार में बिकने वाला बड़ा गोखरू का उत्पाद

गोखरू बड़ा (*Pedalium murex* Linn.)

हिन्दी : बड़ा गोखरू

स्थानीय : बड़ा गोखरू

कुल : पेडालियेसी

प्राप्ति स्थान : यह पौधा प्राकृतिक रूप से खेतों के किनारे बंजर और रेतीली जमीन पर, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता है । यह वर्षा ऋतु में बहुत पैदा होता हैं।

वानस्पतिक वर्णन : यह एक वर्षीय, 30–50 सेंमी. ऊँचा शाकीय पौधा है। इसकी जड़ें गहरे नांरगी रंग की होती हैं। इसकी शाखाएं जमीन पर झुकी रहती हैं। शाखायें चिकनी, गोलाकार एवं तने के आधार से निकलती हैं। पत्तियां विपरीत अण्डाकार, कटी फटी एवं चिकनी सतह वाली होती हैं। फूल पीले रंग के एकल एवं घंटाकार होते हैं। फल 3–4 कांटे वाले एवं द्विकोषीय होते हैं । बीज चिकने भूरे एवं लम्बे होते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा।

औषधीय उपयोग : सम्पूर्ण पौधा औषधीय रूप मे प्रयोग होता है। इसका उपयोग विभिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न रूप से किया जाता है। पश्चिमी राजस्थान में विशेषकर जोधपुर एवं बाड़मेर जिले में इसका उपयोग मुख्यतया पुरुष की नंपुसकता दूर करने में किया जाता है । इसके फल का पाउडर बनाकर दूध के साथ प्रातः लिया जाता है । यह एक टॉनिक की तरह काम करता है। पथरी और मूत्राशय के रोग में भी लाभदायक है। पौधे को पानी में मसलकर उसको पीने से गोनोरिया की तकलीफ में आराम मिलता है। इसके पत्तियों की सब्जी बनाकर भी खाया जाता है। चर्म रोग, ह्रदय रोग, बवासीर और कुष्ठ रोग में भी लाभदायक है। इसके पत्ते रक्त शोधक होते हैं। जड़ का क्वाथ पीने से शरीर में पित्त का प्रभाव कम हो जाता है। दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी एवं घुमक्कड़ जातियों में यह पौधा बहुत उपयोगी माना गया है ।

पौध प्रसंसकरण : इसके बीजों को परिपक्व होने पर तोड़कर धूप में सुखाते हैं एवं थोड़ा सूखने पर छाया में रखते हैं जिससे कि इनका रंग काला न हो व शेष बचा हुआ पौधा ताजा ही काम में लिया जाता है ।

विपणन : इसके फल बेचने पर 20–30 रुपये प्रति किलो की दर से आय प्राप्त की जा सकती है ।

बल का पौधा

बाजार में बिकने वाला बल का उत्पाद

बल (*Sida cordifolia* Linn.)

अंग्रेजी	:	कन्ट्रीमेलो
हिन्दी	:	बल
स्थानीय	:	बल
कुल	:	मालेवेसी

प्राप्ति स्थान : यह वनस्पति प्राकृतिक रूप से रेगिस्तानी क्षेत्र में पायी जाती है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह एक बहुवर्षीय झाड़ीदार पौधा है जिसकी ऊंचाई लगभग एक मीटर होती है । इसके तने पर सफेद रुई जैसे रोंये पाये जाते हैं। पत्तियाँ छोटी, हृदयाकार, दंतुरित किनारे वाली एवं रोंयेदार होती हैं। फूल पीले रंग के होते हैं। फल गोल चक्राकार एवं कंघी की तरह होते हैं। इसके बीज त्रिकोणीय एवं काले होते हैं। इसमें सितम्बर से मार्च माह तक फल एवं फूल लगते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा।

औषधीय उपयोग : सम्पूर्ण पौधे का क्वाथ बार–बार आने वाले ज्वर में उपयोगी माना जाता है । पत्तियों एवं जड़ को पानी में पीस कर फोड़े पर लगाया जाता है, जिससे फोड़ा जल्दी पक जाता है और उसका मवाद बाहर निकल आता है। जड़ की छाल का पाऊडर मूत्र एवं स्नायु तंत्र सम्बन्धी रोगों में लाभदायक है । इसका बीज दस्तावर होता है। यह एक बलवर्द्धक टॉनिक भी है ।

पौध प्रससंकरण : सम्पूर्ण पौधे को फल पकने के बाद जड़ सहित उखाड़ कर धूप में सुखा लिया जाता है । पके फल से बीजों को निकाल कर एकत्रित कर लिया जाता है ।

विपणन : इस पौधे के बीज 20 रुपये एवं पंचाग 10 रुपये प्रति किलो की दर से बेचे जा सकते हैं।

मकोय का पौधा

बाजार में बिकने वाला मकोय का उत्पाद

मकोय (*Solanum nigrum* Linn.)

अंग्रेजी : ब्लेक नाइट शेड

हिन्दी : मकोय

स्थानीय : मकोय

कुल : सोलेनेसी

प्राप्ति स्थान : यह वर्षा ऋतु में पाया जाने वाला पौधा खरपतवार के रूप में बाग बगीचों के आसपास और खाली स्थानों पर पाया जाता है। यह नमी वाले क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है ।

वानस्पतिक वर्णन : मकोय के पौधे एक से सवा फुट तक ऊँचे होते हैं । यह एक वर्षीय पौधा है । मुख्य तने से बहुत सारी शाखायें आड़ी टेढ़ी निकलती हैं जिससे यह पौधा मिरची के पौधे की तरह लगता है । शाखायें चिकनी, नरम और कभी कभी धारीदार होती है एवं इसके पत्ते गोल व लम्बे होते हैं। पुष्प छोटे, सफेद रंग के और गुच्छे में होते हैं । इसके फल छोटी गूंदी के समान बहुत छोटे होते हैं । कच्चे फल हरे रंग के होते हैं व पकने पर बैगंनी रंग के हो जाते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा

औषधीय उपयोग : यह पौधा चर्म रोग, खुजली, दाद, गठिया, यकृत और तिल्ली के रोगों में उपयोगी साबित हुआ है । पौधे का लेप कटे एवं जले हुए भाग पर, जोड़ों, फोड़े एवं फुन्सी पर लगाने से घाव जल्दी भर जाता है और दर्द में कमी आती है । पौधे का रस पीने से यकृत की वृद्धि कम हो जाती है। मकोय का क्वाथ पीने से दबी हुई चेचक बाहर निकल आती है । इसका क्वाथ ज्वर, अनिद्रा एवं पीलिया रोग में लाभदायक है। इसका फल दस्तावर एवं भूख बढ़ाने वाला है। कच्चे फल का लेप दाद के ऊपर लगाया जाता है। यह पौधा घरेलू औषधि के रूप में अधिक काम आता है। पौधे का पंचाग बहुत उपयोगी है ।

पौध प्रससंकरण : पौधा एकत्रित करके सम्पूर्ण पौधे के छोटे – छोटे टुकड़े करके धूप में सुखाना चाहिए । फलों को पकने से पहले या अपरिपक्व अवस्था में तोड़ना चाहिये ।

विपणन : इसके सूखे हुए पौधे का पंचाग 10 रुपये तथा फल को बेच कर 30–40 रुपये प्रति किलो प्राप्त किये जा सकते हैं।

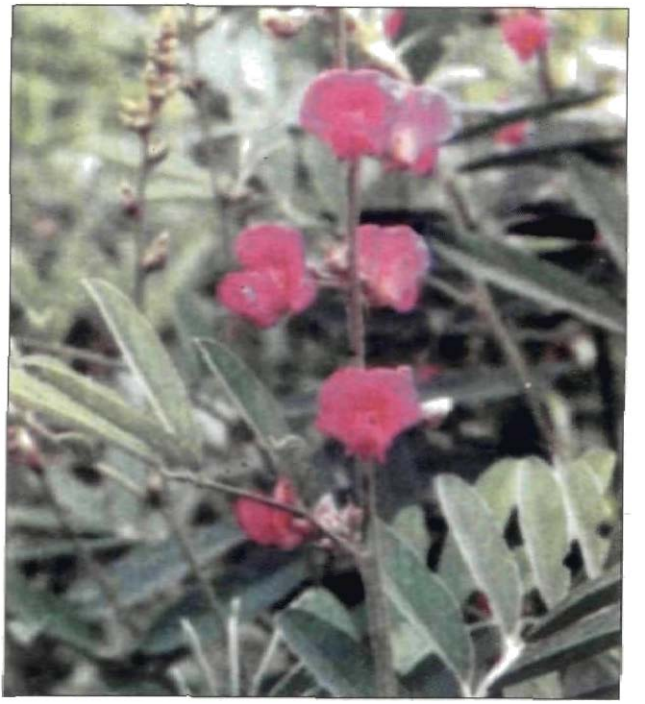

बियानी का पौधा

बाजार में बिकने वाला बियानी या सरफोका का उत्पाद

सरफोका / शरपुंखा (*Tephrosia purpurea* (Linn.) Pers.)

अंग्रेजी : परपल टेफरोशिया
हिन्दी : सरफोका
स्थानीय : बियानी
कुल : फेबेसी

प्राप्ति स्थान : यह पौधा प्राकृतिक रूप से सभी मैदानी व रेगिस्तानी स्थानों पर पाया जाता है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह एक बहुवर्षीय, बहुशाखित 1 से 2½ फीट ऊँचा पौधा है । इसका तना हरा बेलनाकार एवं चिकना होता है। इसकी पत्तियाँ सपत्रक होती हैं, जिसमें 5–9 पत्रक होते हैं। पत्रक की ऊपरी सतह चिकनी होती है जबकि निचली सतह रोयेंदार होती है । इसके पुष्प बैंगनी रंग के होते हैं। फली सीधी, चपटी एवं रोयेंदार होती है । जुलाई से दिसम्बर माह तक फूल एवं फल लगते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा

औषधीय उपयोग : सम्पूर्ण पौधा पेट साफ करने, श्वास नली की सूजन दूर करने, त्वचा रोग, बवासीर, लीवर एवं गुर्दा रोग इत्यादि के उपचार में काम आता है । इसकी पत्तियों का धुँआ अस्थमा में उपयोगी है । इसकी फली का रस शरीर की जलन व दर्द मिटाने के काम आता है । इसके बीजों से प्राप्त तेल से खुजली, एग्जीमा रोग ठीक हो जाते हैं।

पौध प्रसंसकरण : फल आने के पश्चात् इसको जड़ सहित उखाड़ कर छाया में सुखा लेना चाहिये। सूखने के पश्चात् जड़ को अलग कर दें तथा पौधे के ऊपरी हिस्से को एकत्रित करना चाहिये ।

विपणन : उपरोक्त रूप से सुखाये गये पौधे को बेचने से 10–15 रुपये प्रति किलो एवं जड़ को बेचने से 30–40 रुपये प्रति किलो की आय अर्जित की जा सकती है ।

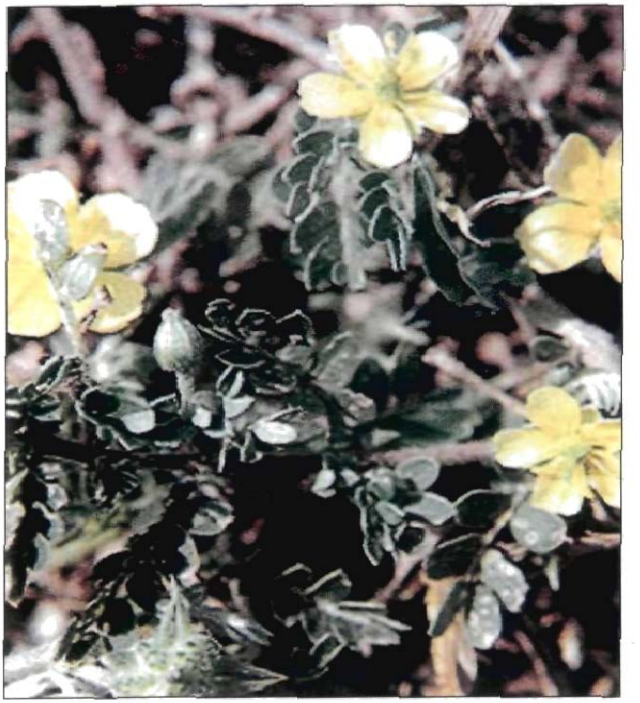

काँटी का पौधा

बाजार में बिकने वाला काँटी का उत्पाद

गोखरू छोटा (*Tribulus terrestris* Linn.)

अंग्रेजी	:	लेंड केलेट्रापस
हिन्दी	:	गोखरू, त्रिकंटक
स्थानीय	:	काँटी
कुल	:	जायगोफिलेसी

प्राप्ति स्थान : यह प्राकृतिक रूप से रेतीली एवं कंकरीली जमीन पर उगने वाला मरुस्थलीय पौधा है । यह खेतों के आसपास एवं बंजर जमीन पर वर्षा ऋतु में बहुत पैदा होता है ।

वानस्पतिक वर्णन : यह एक वर्षीय रोयेंदार पौधा जमीन के ऊपर फैला रहता है । इसकी शाखायें रोयेंदार एवं चिकनी होती हैं । पत्तियां चने के पत्तों की तरह लेकिन कुछ बड़ी होती हैं । पत्तियां विपरीत एवं 3–6 जोड़े में होती हैं। पुष्प एकल एंव पीले रंग के होते हैं । फल के ऊपर दो बड़े और दो छोटे काँटें होते हैं । फल 3–5 कोषीय होता है व प्रत्येक कोष में बीज होते हैं ।

उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पौधा

औषधीय उपयोग : दक्षिण भारत में गोखरू को एक प्रभावशाली औषधि माना जाता है । इसकी जड़ शीतल, पौष्टिक, भूख बढ़ाने वाली एवं मूत्रवर्धक है। इसके पत्ते रक्तशोधक हैं। पत्ती के क्वाथ से कुल्ला करने पर मुख रोग एवं मसूड़ों की सूजन में कमी आती है । पित्ताशय की पथरी में पत्तियों को पीस कर काम में लिया जाता है । फल का क्वाथ मूत्र वर्धक होने से गुर्दे की पथरी में लाभदायक है । पूरे पौधे को पानी में मसल कर उस पानी को पीने से नपुंसकता दूर हो जाती है ।

पौध प्रससंकरण : पौधे को दोपहर के समय तोड़कर पत्तियों को अलग कर लेना चाहिये । पत्तियों को छाया में सुखाना चाहिये एवं शेष पौधे को छोटे छोटे टुकड़े करके सुखाना चाहिये । फल को परिपक्व अवस्था में तोड़कर धूप में सुखाना चाहिए ।

विपणन : इसके सूखे फलों को बेच कर 15–20 रुपये प्रति किलो आय प्राप्त की जा सकती है ।